Get More Visit : http://hindicomics.blogspot.com

चित्रकथा विशेषांक

जून [द्वितीय] '93

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

पाक्षिक

बालहंस

इस अंक में है

- विटप विशाल
- गिनकर रखना
- आल्हा ऊदल
- भाग्यविधाता
- मदालसा
- एक लुटिया और

संजो कर रखने योग्य अंक

मूल्य: 10 रु.

आल्हा-उदल

लोक गाथा काव्य पर आधारित
प्रस्तुति - अनंत कुशवाहा

आधे आंगन भांवर पड़ती... आधे चले चमक तलवार!

अ-1

उतरती सांझ जब ढोलक की थाप पर गायक आल्हा गायन शुरू करता है.....

... तो भीड़ जुटने लगती है।

उमंग और साहस बोलों में घुल मिल कर श्रोताओं को उद्वेलित कर देते हैं।

हाथ जोड़ सिर सबै नवाउं, मेरी असने में करौ सहाय।
ज्ञान प्रदान करौ हिरदै में, जासों आल्ह खंड बन जाय!

अ-2

कन्नौज का राजा था जयचन्द।

महाराज, आपकी आज्ञा हो तो सामंत चन्देलराय को हाजिर किया जाय?

हां। लेकिन उसकी शक्ति की थाह भी ले लो।

अ-3

चन्देल राय बाघ की तरह सभा में आया।

पूर्व निर्धारित संकेत पर प्रहरी की ढाल ...

.. चन्देल राय परमाल के पांवों के पास गिरी।

दरबारी हंसे। संभलते संभलते चन्देलराय ने तलवार से ढाल के दो टुकड़े कर दिए।

अरे!

ह: ह: ह: ह:

अ-4

वाह वीर परमाल ! तुम तो मेरे पांव का रोड़ा भी हटा दोगे।

महोबे का गढ़ीदार माहिल सिर उठा रहा है। उस पर राज्य कर बकाया है।

माहिल की हेकड़ी निकाल कर तुम महोबे का शासक बन जाओ।

जो आज्ञा स्वामी !

अ-5

महोबे का गढ़ीदार माहिल कुटिल था किन्तु तलवार का धनी नहीं था।

मुकाबला हुआ तो मैं मारा जाऊंगा।

मैं अपनी बहन मल्हना का विवाह आपसे करूंगा वीर चन्देलराय।

इज्जत बचाने का यही उपाय है किन्तु यह हार भूलूंगा नहीं।

अ-6

अ-6

माहिल को उरई का ठिकनिदार बनाया गया।

मुझे महोबे से निकाला। मैं महोबे वालों को चैन से नहीं रहने दूंगा।

कुछ समय शान्ति से बीते।

अ-7

कन्नौज और महोबे के प्रभाव में छोटे छोटे गढ़ थे।

इनमें आपस में ठनी रहती थी।

बनाफल गोत्र के जस्सराज और बच्छराज पर चन्देलराय का विशेष स्नेह था।

बच्छराज ! यह कड़ंगाराय का वार है!

जस्सराज, माढ़ो का पानी चखेंगे !

जस्सराज, बच्छराज दोनों भाई मेरे भाई की तरह थे।

अ-8

आल्हा व ढेवा मेरे पुत्र ब्रह्मा के साथ राजकुमारों की तरह पलेंगे।

जस्सराज की विधवा पत्नी दिवला चिन्तित थी।

आल्हा को सम्मान मिल गया लेकिन उसका क्या होगा जो मेरे गर्भ में है।

विधवा को सन्तान होने से बदनामी होगी।

अ-9

दिवला ने कलेजे पर पत्थर रख लिया था।

दासी, मेरे इस नवजात शिशु को कहीं फेंक आ।

जीवित शिशु राजा चन्देल राय को मिला।

यह महोबे का बेटा माना जाएगा। मैं इसका नाम ऊदल (उदय चंद राय) रखता हूं।

अ-10

दिवला मौजी, ऊदल का तुम्ही पालन करो।

मेरा पुत्र मुझे ही मिल गया।

आल्हा, ऊदल, ढेवा, ब्रह्मा साथ साथ बड़े होने लगे।

उरई का ठिकानेदार माहिल सुलगता रहता।

बनाफल गोत्र वाले फलफूल रहे हैं।

ऊदल...

पिता का बदला!

मैंने बहन ब्याही थी। महोबे में मेरा प्रभाव बढ़ना चाहिए था।

अ-11

अश्वारोहण, आखेट में शक्ति परीक्षण होता था। आल्हा का अश्व था 'हरनागर', ऊदल का 'रसबेंदुल'

रसबेंदुल सवार तुम जीते।

ब्रह्मा, ढेवा, आखेट पर चलें? हमारे हथियारों पर लगती जंग छूटेगी।

चलें, ऊदल।

अ-12

लोहे की धार परखती, मूठ पर कसी अंगुलियां लोहे की होगई।

ऊदल, क्यों वन्य जीवों पर भाले आजमाता है?

आल्हा भैया, ये जंगल में भी नहीं चले तो महोबे में शोभा की वस्तु बन कर रह जाएंगे।

अ-13

आल्हा ऊदल, तुम्हारी फड़कती भुजाओं के लिए महोबा छोटा पड़ता है।

तुम दोनो महाराज जयचन्द की सेवा में जाओ।

कन्नौज समृद्ध नगर था।

कन्नौज राज दरबार में।

अ-14

जयचंद के दरबार में एक से एक बंटी, अकड़ी, तनी मूंछें थीं।

ऊदल, हम महोबे में ही ठीक थे।

आल्हा, ऊदल को सामान्य सरदारों में स्थान मिल गया।

महोबे का पानी कन्नौज में स्थिर तो होने दो भैया।

अ-15

कन्नौज राजा जयचन्द की पुत्री संयोगिता के स्वयंवर की तैयारी हो रही थी।

देश-देश के राजा आए।

दिल्लीपति पृथ्वीराज नहीं आए। उनकी मूर्ति लगा दी गई थी।

अ-16

राजाओं ने अपने जूते पृथ्वीराज की मूर्ति के पास उतारे।

हा: हा: ... पगड़ी न सही जूतों की सुरक्षा हमने दिल्ली पति को सौंपी है।

संयोगिता मन ही मन पृथ्वीराज को वरण कर चुकी थी।

उनकी मूर्ति का यह अपमान!

स्वयंवर का समय हो गया राजकुमारी जी

अ-17

उदल, हमारे चाचा, महोबापति चन्देलराय भी पधारे हैं।

संयोगिता से विवाह के इच्छुक राजा, राजकुमार देखते रहे...!

उसने वरमाला पृथ्वीराज की मूर्ति के गले में डाल दी।

अ-18

क्षत्राणियां एक बार ही किसी का वरण करती हैं। मैंने अपना निर्णय बता दिया।

राजा जयचन्द ने उत्तेजित राजाओं को रोका।

शांत रहिए!

हम इस पर पुनः विचार करेंगे।

आल्हा भैया, खांड़ा बजने का अवसर टल गया।

अच्छा ही हुआ।

अ-19

महोबा पति चन्देल राय ने मूर्ति हटवा दी।

इसे प्रदेश द्वार पर लगा दो।

राजा जयचन्द ने चन्द्र भाट को बुलाया।

चन्द्र, तुम महाराज पृथ्वीराज के पास संयोगिता के वरण का संदेश ले जाओ।

जो आदेश अन्नदाता।

अ-20

दिल्ली पति पृथ्वीराज

राजकुमारी संयोगिता ने मेरी मूर्ति के गले में वरमाला डाली...

... हम डोली लेने चलेंगे चन्द्र भाट।

एक सैन्य दल के साथ पृथ्वीराज कन्नोज पहुंच गया।

अ-21

हैं! मेरी मूर्ति द्वारपाल के स्थान पर।

सैनिकों, कन्नौज की ईंट से ईंट बजा दो।

रोकिए महाराज, सैनिकों को रोकिए! मूर्ति तो महोबे के चन्देलराय ने रखवाई थी।

अ-22

लड़ाई रोक दो

ओह, जब भी मैं महोबे की धार परखना चाहता हूं, रोक दिया जाता हूं।

उदल, कन्नौज के पास जंगल की कमी नहीं है। वहीं जाना होगा।

अ-23

पृथ्वीराज के साथ संयोगिता की डोली विदा कर दी गयी।

मेरी मूर्ति का अपमान महोबे के चन्देलराय ने किया था....

इसका उत्तर देने का समय अभी नहीं है पर याद रखूंगा।

अ-24

ऊदल कन्नौज के निकट अश्वारोहण कर रहा था।

अगर हाथ पर हाथ धरे बैठना ही था तो महोबा क्या बुरा था।

वह घोड़ा बढ़ाते उरई तक पहुंच गया जहां का ठिकानेदार माहिल था।

अ-25

अब लौटूं पर खाली हाथ क्यों।

उद्दंड युवक, यह राजा माहिल का बाग है।

भाग जाओ नहीं तो दंड भुगतना होगा।

कौन दंड देगा? ऊदल यह देखना चाहता है।

अ-26

मैं माहिल का पुत्र हूं। मरने से पहले नाम बता।

तिरिया बढ़िया काश्मीर की और महुबे का नागर पान।
तीन लोक के सब वीरों में रन का दुल्हा उदयचंद जवान।

महोबे के उदयचन्द की याद रखना।

ऊदल जैसे फट पड़ा।

अ-27

वह तो बवंडर था। पिता जी से कहें।

माहिल बौखला गया।

फिर महोबा! उदयचन्द की यह जुर्रत।

मेरे बेटे पर तलवार क्यों भांजता है!

माढ़ो जाकर अपने बाप का बदला ले।

याद दिलाने का धन्यवाद मामा।

अ-28

तेरे पिता जस्सराज को माढ़ो पति ने मारा था और..

..तेरे चाचा बच्छराज को कड़ंगा राय ने।

तू भी वहीं मर खप।

बस मामा, अब आप पधारो।

जय दुर्गा मां!

हाथी उपजे कजरीवन में घोड़ा काबुल औ कन्धार।

तेगा उपजे बर्दवान में बीटा बूंदी की तलवार

अ-29

(आल्हा-ऊदल)

माढ़ो विजय

आल्हा-ऊदल सैन्यदल तैयार कर रहे थे।

कन्नौज की सेना की एक टुकड़ी और आ मिली।

कन्नौज के राजकुमार लाखन!

हां वीर ऊदल

अ-30

ऊदल, मैं लाखन तुम्हारा पगड़ी बदल भाई बनना चाहता हूं।

मेरा सौभाग्य है।

अब माढ़ो पर हम दोनों की तलवारें गाज बन कर गिरेंगी।

अ-31

आल्हा-ऊदल, लाखन की सेना नर्मदा-तट पर पहुंची।

धोबियों से पता करो नदी कहां उथली है।

कुछ सेना बबरी बन में छिपा कर माढ़ो घेर लो।

अ-32

माढ़ो गढ़ से सैन्य नायक बन कर टोडर आया।

लाखन ने दो टूक कर दिया।

माढ़ो पति कड़िया गजारूढ़ हो लड़ने आया।

एक को मारे दो मर जावे, तिसरा खौफ खाय मर जाए।
चौथा मर जाए लहास देख कर, पंचवा बिना खौफ मर जाए।

अ-33

ऊदल ने मारक सांकल..

..झटक कर फेंक दी।

कड़िया युद्ध क्षेत्र से भाग गया।

अ-34

राजा कड़िया ने संधि वार्ता के लिए ऊदल को बुलाया है।

माढ़ो गढ़ की बाहरी लड़ाई तो हमने जीत ली।

ऊदल को गढ़ में भेजने में खतरा है।

मैं नहीं डरता।

अ-35

ऊदल माढ़ो गढ़ में गया।

राजकुमारी विजना, वह है महोबे का बांका जवान ऊदल जिसने माढ़ो को थर्रा दिया है।

मेरे मन में भी सिहरन सी हो रही है।

घेर कर बन्दी बना लो।

अ-36

ऊदल बन्दी हो गया था।

मेरे साथ धोखा हुआ।

विजना ऊदल पर मुग्ध थी।

तू मेरी प्रिय दासी है। ऊदल के बन्दी होने की सूचना उनके साथियों तक पहुंचा सकती है?

क्यों नहीं राजकुमारी जी।

अ-३७

ऊदल जैसा वीर तहखाने में बन्दी शोभा नहीं देता।

हां राजकुमारी जी। वे तो आपके हृदय में बन्दी होने योग्य हैं।

दासी से सूचना मिली।

ऊदल को छुड़ाने हम छद्म भेष में जाएंगे।

अ-३८

आल्हा, लाखन, ढेवा आदि जोगी भेष में थे।

कई लोगों ने स्त्री रूप धारण किया था।

विजना ने जोगियों को भोजन कराया।

मैं तहखाने तक पहुंचा दूंगी।

हरिद्वार के जोगी

अ-३९

वहां, उस तहखाने में।

राजकुमारी विजना, आपने हमारी सहायता क्यों की?

मैं अपनी वरमाला की रक्षा कर रही हूं।

हल्की मुटभेड़ के बाद सब सुरक्षित निकल गए।

अ-४०

क्या!..जोगियों के भेष में आकर ऊदल को छुड़ा ले गए।

हां राजाजी, अब उनकी सम्मिलित शक्ति गढ़ पर चढ़ाई करेगी।

युद्ध का नगाड़ा बजने दो।

बाप की तरह बेटों के सिर भी दीवार पर लटकेंगे।

अ-41

आल्हा, ऊदल, लाखन के आक्रमण से माढ़ो गढ़ का फाटक टूट गया।

कड़गाराय ने हथियार डाल दिए।

पिता की मृत्यु का बदला इतने शोणित से ही चुक गया।

इन निशस्त्र लोगों को क्षमा करना ही उचित है।

अ-42

ऊदल के साथ विजना का ब्याह हो गया।

माहिल चुगली करने पहुंचा।...कन्नौज में-

महाराज, आल्हा-ऊदल ने माढ़ो में कन्नौज की सेना कटा दी।

राजकुमार लाखन... ... हाय गुंसाईं।

सत्य समाचार आने तक अशुभ मत बोलो माहिल।

अ-43

चुगलखोर माहिल महोबे पहुंचा।

राजा चन्देलराय, ऊदल के कारण महोबे वीरों के शव ही यहां आएंगे।

ऊदल माढ़ो जीत कर और विवाह कर यहां आ रहे हैं।

मैं यहां से खिसकूं।

फिर कभी सही।

अ-44

(आल्हा-ऊदल)
आल्हा का ब्याह
नैनागढ़ का नेपाली राजा था राघोमच्छ।
एक ही राजकुमारी थी – मछला (सोनवा)
सब पंछिन में बढ़िया हंसा,
सब जल बीच गंग की धार।
तीन लोक की सब तिरियों में
सबसे सुघड़ मछला दे नार।
मछला बेटी ब्याह योग्य हो गई।
मुझे देख कर पिताजी ठिठक गए।
अ-45
राजकुमारी मछला के लिए योग्य वर चाहिए।
मेरा निमंत्रण लेकर देश देश में जाओ लेकिन महोबा मत जाना। सुना है...
...वहां के वीर बनाफल ओछी जाति के हैं।
कुण्डा नरेश के लिए नैना गढ़ से टीका है।
अ-46
नैनागढ़ की राजकुमारी से विवाह! लेकिन शर्तें पूरी करने के बाद।
रणधौरा से मल्ल युद्ध, लौह स्तंभ उखाड़ना...
अपने वश की बात नहीं।
अ-47
शर्तें सुन कर मछला का टीका लेना सबने अस्वीकार कर दिया।
नहीं
शर्तें..
हम नहीं।
दूतों से आल्हा-ऊदल का सामना हुआ।
हम शर्तें पूरी करेंगे। जाओ नैनागढ़ में मण्डप सजाओ।
अ-48

आपका नाम वीर शिरोमणि?
महोबे का आल्हा हूं और यह मेरा अनुज ऊदल।
राजा राघोमच्छ ने महोबे वालों के लिए मना किया था।
राजकुमारी मछलो कुंवारी रह जाती।
अ-49
राजकुमारीजी, महोबे वालों ने टीका झेल लिया है।
आल्हा शर्तें पूरी करने आ रहे हैं।
शायद मेरी मनोकामना पूर्ण होजाए।..
...ऊदल मेरा देवर बने।
अ-50
महोबा के रणबांकुरे नैना गढ़ पहुंच गए।
उरई का माहिल भी नैनागढ़ पहुंचा था।
राजा राघोमच्छ को भड़का सकूंगा।
महोबे के बनाफलों के अलावा किसी उच्चजाति ने टीका नहीं लिया?
नहीं स्वामी, विवाह की शर्तें देख कर सब पीछे हट गए।
अ-51
आल्हा, ऊदल नैनागढ़ के रणधीरा के हाथों मरने आए हैं।
लौह स्तंभ उखाड़ने में भी जग हंसाई होगी।
हः हः... उन्हें शर्तें पूरी करने दो राजा राघोमच्छ।
माहिल महोबे वालों का दुश्मन है।
अ-52

आल्हा, ऊदल,गढ़ में पहुंचे।
यह है रणधौरा।
आल्हा, रुई के इस गदेले को मैं देख लूंगा लेकिन लौह स्तंभ...
उसे उखाड़ने का प्रयत्न मैं करूंगा ऊदल।
अ-53
रणधौरा अधिक बलशाली था लेकिन महोबे के पानी में साहस और चातुर्य था।
ऊदल, यह ले!
ओह!
अ-54
आह! आह! मैं हारा।
आल्हा भैया, दूसरी शर्त...
हां!
पूर्ण वेग से आल्हा ने खंभे को टक्कर दी।
अ-55
यही तरीका था। लौह स्तंभ भुजबल से नहीं उखड़ता।
मैं बनाफलों को जीवित नहीं जाने दूंगा।
अभी नहीं राजाजी। उनके साथी लड़ाकू और सशस्त्र हैं।
भांवर के समय निहत्थे होंगे, कटवा दीजिएगा।
अ-56

आल्हा-ऊदल ने मंत्रणा की।
मामा माहिल यहां मौजूद हैं। मुझे दगा की उम्मीद है।
मंण्डप में चलेंगे तो शस्त्र छिपा कर ले चलेंगे।
आल्हा, तुम भांवर फिरना, चारो कोनों पर तलवारें फिरेंगी।
अ-57
आल्हा के ब्याह मे ही यह अजीब बात हुई कि.... 'आधे आंगन भांवर फिरती, आधे चली छपक तलवार।'
अ-58
माहिल, तुमने मुझे उकसाया! नैनागढ़ से निकल जाओ।
आल्हा, ऊदल वीर हैं। मैं उनसे क्षमा मांग लूंगा।
यहां भी असफलता मिली। अब तो दिल्ली पति पृथ्वीराज के ही कान भरने होंगे।
अ-59
माहिल दिल्ली पहुंचा।
महोबे का प्रभाव बढ़ता जा रहा है महाराज उसे कुचलिए नहीं तो एक दिन वह दिल्ली के सामने ताल ठोंकता नजर आयेगा।
हां माहिल, महोबे ने राजकुमारी बेला का हाथ मांगने की धृष्टता की है।
अ-60

परमाल पुत्र ब्रह्मा राजकुमारी के योग्य कहां!

उसने बनाफलों का साथ देकर अपने को नीचे गिराया है।

चौहान वंश की कन्या वहां नहीं जा सकती।

सेनापति से कहो सेना तैयार करें।

अ-61

पृथ्वीराज की सेना का सामना आल्हा, ऊदल व उनके अन्य भाइयों ने किया।.... यह महासमर था।

अ-62

दिल्ली और महोबे की सेनाओं की तलवारों की बाढ़ में कितने ही वीर धराशायी होगए।

मैं आल्हा का पुत्र इन्दल हूं माहिल!

आह

दिल्ली का एक और गिरा!

हीक!

यह महोबे का तारा डूबा!

अ-63

ब्रह्मा, लाखन, मलखान और ऊदल का भी अंत होगया।

क्रुद्ध आल्हा ने दिल्ली सेना को खदेड़ दिया।

महाराज रण छोड़ गए!

भागो!

अ-64

चारो ओर शवों के ढेर, इतनी हत्याएं! मनुष्य अपनी जाति को नष्ट करने पर क्यों उतारू हो जाता है?
आल्हा के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया था।
आल्हा कहां चले गए इस विषय में लोक मानस भी अनजान है।
अ-65
समाप्त

बिल्ली की चूहे से पहले कोई दुश्मनी नहीं थी। एकबार ऐसा हुआ कि...
बिल्ली की खीझ
अकु
मैं सुबह-सुबह गंगा-स्नान करने जाऊंगी लेकिन कोई टोके नहीं।
बिल्ली मौसी कहां चली?
उफ!
किधर जा रही हो बिल्ली रानी?
रोज कोई न कोई टोक देता है और मैं गंगा स्नान करने नहीं जा पाती।
घूमने जा रही हो बिल्ली बाई?
अहा, आज कोई नहीं है।
सत्यानाश!
जहन्नुम में!
बस बहुत हुआ! अब कोई टोकेगा तो मैं उसे कच्चा चबा जाऊंगी।
चुपके चुपके कहां जा रही हो बिल्ली....
बस, उस दिन से बिल्ली चूहे को देखते ही उस पर टूट पड़ती है।
ठहर तो!
अरे बाप रे!
समाप्त

BALHANS June (II) 95 Regd No. R.J. 2688/86 आर.एन.आई. नं. 46292/86

नन्हीं कूंची

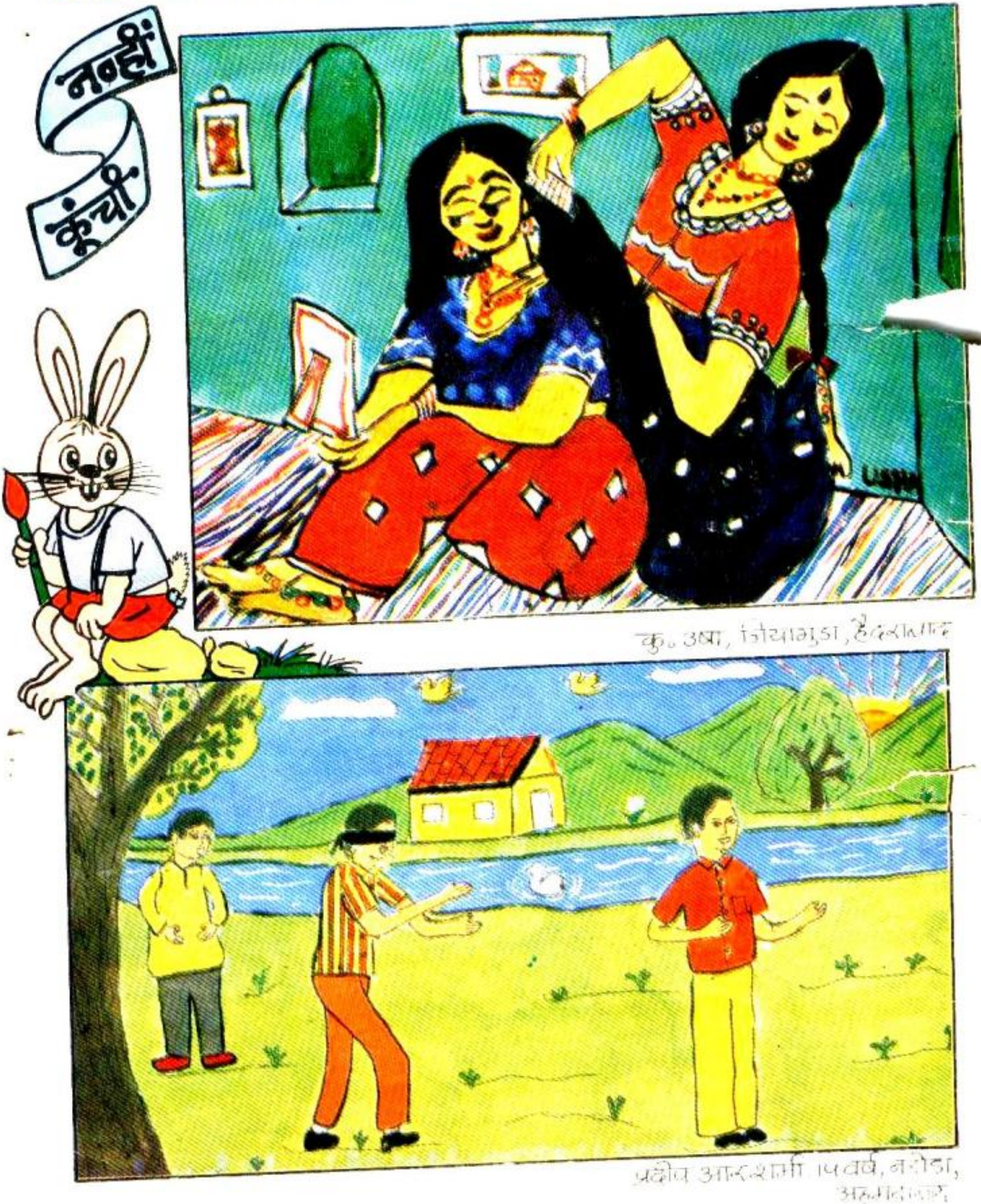

कु. उषा, जियागुडा, हैदराबाद

प्रदीप आर. शर्मा 14 वर्ष, नरोड़ा,
अहमदाबाद